टीचर और टीचिंग प्रोफ़ेशन

समझ, तैयारी व समस्याएँ

वेनु तनेजा और अंकित मौर्य

पिछले कुछ समय से सरकारी नीतियों में बदलाव, समाज की प्राथमिकताओं में फेरबदल और शिक्षकीय कार्य की बढ़ती जटिलताओं के चलते शिक्षक की छवि को लेकर विमर्श शिखर पर आ गया है। एक पेशे के रूप में शिक्षकीय कार्य की मान्यताएँ समाज, सरकार और स्वयं शिक्षक की नजरों में भिन्न-भिन्न हैं। कहीं स्वायत्तता, कहीं योग्यता तो कहीं सामाजिक परम्पराओं को आधार बनाते हुए यह विमर्श हमेशा ही कुछ नए सवालों को जन्म देकर बिना किसी नतीजे के ख़त्म होता है। वेनु और अंकित ने दो सहेलियों, एक शिक्षिका व एक शिक्षाशास्त्र की विद्यार्थी के बीच हुई बातचीत को आधार बनाते हुए एवं विभिन्न शिक्षाविदों की मान्यताओं के हवाले से इस ज्वलंत विषय पर गहरा विश्लेषण प्रस्तुत किया है। सं.

शिक्षा और शिक्षकों का महत्त्व पिछले कुछ समय में तमाम उतार-चढ़ावों से गुज़रा है। फिर चाहे वह राजनीति हो या पे-कमीशन (वेतन आयोग) से जुड़े बदलाव या बदलती अर्थव्यवस्था, सभी ने इन दोनों तत्त्वों को किसी न किसी रूप में नए आयाम दिए हैं। शिक्षक की अवधारणा इसके शुरुआती प्रारूप से आगे चलकर अब एक नया ही रूप ले चुकी है। जहाँ आज भी लोगों के मन में गुरु की ऐसी महिमा के क़िस्से बसे हैं जब गुरु के कहने पर शिष्य अँगूठा काटकर रख देते थे, वहीं कुछ लोगों को आज के कलियुग में शिक्षक, शिक्षातंत्र में सबसे नीचे के पायदानों में से एक पर आसीन एक आवाज़ विहीन प्राणी नज़र आता है। रोहित धनकर ने अपने एक आलेख में शिक्षक की तुलना बन्धुआ मज़दूर से की है। वे यह भी कहते हैं कि समय के साथ शिक्षकों से हर तरह के निर्णय लेने के अधिकार छीन लिए गए हैं जिसमें विद्यालय समयसारिणी, पाठ्यचर्या, किताबें, पढ़ाने का तरीका और मूल्यांकन सम्बन्धी अधिकार सम्मलित हैं। इन सबसे जुड़े फैसले ऊपरी स्तर पर लिए जाते हैं और शिक्षकों की भूमिका को इन निर्णयों को लागू करने व इनके आधार पर काम करने तक सीमित कर दिया गया है। हालाँकि जब बच्चों के सीखने-समझने में कमज़ोरी का मुद्दा उठता है तो सारी ज़िम्मेदारी शिक्षकों की बता दी जाती हैं। (धनकर, 2015) यह कोई छिपी हुई बात नहीं है कि तंत्र और समाज में शिक्षक की छवि और जगह पिछले कुछ समय से लगातार चोट खा रही है। 'क्या शिक्षक एक पेशेवर है?', यह विषय भी समय-समय पर चर्चा की जगहों पर ख़ुद को चर्चा में पाता है। शिक्षक और शिक्षाविद् इस मत की पैरोकारी करते हैं कि शिक्षक पेशेवर होते हैं और इस नाते उन्हें एक पेशेवर का दर्ज़ा और सम्मान मिलना चाहिए। ऐसे में यह सवाल लाज़िमी हो जाता है कि किन बातों को आधार मानकर एक शिक्षक के पेशेवर होने या ना होने की अवधारणा को समझा जा सकता है।

आगे प्रस्तुत है कंचन और वर्षा के बीच हुई एक बातचीत जिसमें सर्वसुलभ मतों से आगे बढ़कर, अनुभवों और शिक्षा जगत को आधार बनाते हुए, शिक्षकों के पेशेवर होने की अवधारणा पर समझ बनाने का प्रयास किया गया है।

कंचन : और तुम्हारी पढ़ाई कैसी चल रही है?

वर्षा: अभी तो सब ठीक है। काफ़ी नई बातें सीखने को मिल रही हैं और कुछ पुरानी बातें भी अब पहले से ज़्यादा गहराई से समझने को मिल रही हैं। कुल मिलाकर समय कहाँ चला जाता है, पता ही नहीं चलता।

कंचन : हा...हा...हा... अकसर ऐसा ही होता है। तुम फ़ोन पर किसी नए विषय के बारे में भी बता रही थीं न? वो क्या था?

वर्षा : ओह हाँ! अभी इस सेमेस्टर में मैंने एक नया विषय लिया है, टीचर प्रोफ़ेशनल डेवलपमेंट। पिछले कुछ सत्रों में हमने शिक्षकों से जुड़ी कई चर्चाएँ की। शिक्षकों की पहचान, उनकी ज़िम्मेदारियाँ, वे ख़ुद को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया का हिस्सा मानते हैं या फिर सर्वज्ञाता की भूमिका में कक्षा में उपस्थित होते हैं, बच्चों को सज़ा देना और उसका प्रभाव जैसे कई मुद्दों पर हमने बात की।

कंचन : अरे! सुनने में तो यह सब बहुत रोचक लग रहा है। मुझे मेरे बीएड के दिनों की याद आ गई। हमारे यहाँ भी शिक्षण प्रक्रियाओं और एक बच्चे के निर्माण में शिक्षक की भूमिका जैसे विषयों पर चर्चा होती थी। हालाँकि, एक-दो शिक्षक ही ऐसी चर्चाओं में रुचि लेते थे और इन्हें प्रोत्साहित करते थे।

वर्षा : हम्म्म्म... मेरे साथ पढ़ने वाले साथियों के अनुभव भी कुछ ऐसे ही रहे हैं। लेकिन एक बात बताओ, एक शिक्षक के तौर पर तुम ख़ुद को कैसे देखती हो?

कंचन : मतलब? मैं तुम्हारी बात नहीं समझी।

वर्षा : अच्छा... तो मेरी कक्षा में शिक्षक और उनके काम की प्रकृति का विषय हमेशा चर्चा में रहता है। हममें से कुछ लोग यह मानते हैं कि शिक्षण का कार्य एक पेशा है और शिक्षक इसमें कार्यरत पेशेवर। और कुछ लोग ऐसे भी हैं जो इस मत से सहमत नहीं हैं।

कंचन : यह तो बड़ी दिलचस्प बात है और सही कहूँ तो इस मत के बारे में, मैं कुछ ख़ास स्पष्ट नहीं हूँ। जहाँ तक मेरी जानकारी है, बी.एड. एक प्रोफ़ेशनल कोर्स माना जाता है जो कि आपको शिक्षक के तौर पर काम करने के लिए तैयार करता है। क्या तुम बता सकती हो कि तुम्हारे यहाँ एक पेशेवर को कैसे परिभाषित किया जाता है?

वर्षा : हाँ, मेरे पास ये कुछ आर्टिकल हैं जिनमें एक पेशेवर और पेशे को परिभाषित किया गया है, पर उसमें जाने से पहले क्या मुझे एक कप चाय मिलेगी?

कंचन : देखो, तुम्हारी बातों में लगकर चाय लाना भी भूल गई मैं। अभी लाती हूँ।

(चाय के बाद)

वर्षा : हाँ तो देखो! 1971 में सिड्नी डोरोस का एक आलेख छपा था, जिसमें उन्होंने अपने केश-कलाकार के साथ हुई बातचीत के बारे में बताया है। उसमें केश-कलाकार को लगता है कि वह और उसका काम एक शिक्षक से ज़्यादा पेशेवर है। इसके साथ ही उन्होंने एक पेशे की पाँच विशेषताएँ भी गिनवाई हैं।

कंचन : अच्छा, क्या हैं ये?

वर्षा : उनकी सूची के अनुसार,

1. पेशे से जुड़े सदस्यों की व्यक्तिगत भलाई से ऊपर समाज की भलाई की परवाह करना।
2. व्यवस्थित एवं विशेषज्ञतापूर्ण ज्ञान और कौशल पर पकड़ एवं इसके इस्तेमाल की समझ।
3. पेशे से जुड़ने के लिए प्रवेश अधिकार, प्रशिक्षण के मानकों और सदस्यों के प्रदर्शन पर सदस्यों का नियंत्रण।
4. अपने काम से सम्बन्धित निर्णय लेने की उच्चस्तरीय स्वायत्तता।
5. एक मज़बूत पेशेवर संस्था जो अपने सदस्यों के उल्लिखित मानदण्डों की प्राप्ति, काम

करने की सन्तोषजनक परिस्थितियों की उपलब्धता और उनके कल्याण और समृद्धि की रक्षा एवं उसकी प्राप्ति की दिशा में काम करे।

1. Concern for the welfare of society above the personal interests of members of the profession.
2. Command and application of a body of specialized and systematized knowledge and skills.
3. Control by practitioners of admission to the profession, standards of preparation, and performance of its members.
4. A high degree of autonomy in making decisions about how to perform one's work.
5. A strong professional organization which enables the group to meet the above criteria, to achieve satisfactory conditions of work, and to advance and protect the welfare of its member.

(Taken as it is from, Dorros 1971)

कंचन : सिड़नी की इस सूची में जो बातें कही गई हैं उन्होंने मुझे सोच में डाल दिया है। अगर इन मापदण्डों के आधार पर मैं अपने काम को परखूँ तो नि:संदेह एक शिक्षक का काम समाज की भलाई से जुड़ा होता है और हमसे यही अपेक्षा रहती है कि हम अपने व्यक्तिगत स्वार्थ से ऊपर उठकर सेवा कर पाएँ। इसके अलावा, शिक्षक स्कूल में पढ़ाए जाने वाले विषयों में से किसी एक में विशेष दक्ष तो होते ही हैं साथ ही बाल मनोविज्ञान, कक्षा प्रबन्धन और सन्दर्भ आधारित शिक्षण देने की पढ़ाई भी हमने की होती है। शिक्षक, शिक्षक संघों और एसोसिएशन का हिस्सा भी होते हैं जिनसे यह अपेक्षित होता है कि वे शिक्षकों के फ़ायदे और विकास के लिए कार्य करेंगे। तो इन तीन आधारों पर तो हम यह कह सकते हैं कि शिक्षक का काम एक पेशेवर जैसा ही है। हालाँकि अगर अन्य दो बिन्दुओं को देखा जाए तो भारत में नए शिक्षकों की भर्ती और प्रशिक्षण में हम कार्यरत शिक्षकों की कोई निर्णायक भूमिका नहीं होती। स्वायत्तता एक ऐसी स्थिति बन चुकी है जिसके तो अब हमें बस सपने ही आते हैं। कुछ वैकल्पिक और प्रयोग आधारित शिक्षण संस्थाएँ और विद्यालय हैं जहाँ शिक्षकों को शायद हमसे ज़्यादा स्वायत्तता मिलती है लेकिन बड़े स्तर पर देखा जाए तो इस तंत्र की प्रक्रियाएँ नौकरशाही और मशीनी हैं। तो सब मिलाकर देखा जाए तो एक शिक्षक का काम कुछ हद तक तो एक पेशेवर-सा है, पर इसमें बहुत कुछ सुधार की सम्भावनाएँ भी हैं।

वर्षा : देखो, इतनी जल्दी निर्णय पर पहुँचने की ज़रूरत नहीं है। जिस तरह इसे मैं देख पा रही हूँ, मुझे लगता है कि एक शिक्षक पेशेवर होता है। जैसे हम फ़िनलैण्ड का उदाहरण लें, जहाँ शिक्षक स्वायत्तता का स्तर बहुत अधिक है और शिक्षकों के योग्यता मानक का स्तर भी बहुत ऊँचा है। भारत की स्थिति में शिक्षकों के काम को समाज सेवा के तौर पर भी देखा जाता है और यह माना जाता है कि उनका काम राष्ट्र निर्माण में योगदान है।

कई देशों में केवल उच्च शैक्षणिक योग्यता वाले लोगों को ही शिक्षण के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। और जैसा कि तुमने भी कहा, हमारे यहाँ शिक्षक संघ होते हैं जो शिक्षकों के कल्याण के लिए काम करते हैं और आवाज़ उठाते हैं। हालाँकि, मैं ऐसा उदाहरण याद नहीं कर पा रही हूँ जहाँ शिक्षकों के चयन और प्रशिक्षण में अन्य शिक्षकों की निर्णायक भूमिका होती हो। तो इस तरह शिक्षण एक पेशे के तौर पर 5 में से 4 मानदण्डों की पूर्ति तो कर ही रहा है।

कंचन : अब तो मैं और अधिक सोच में पड़ गई हूँ।

वर्षा : मैं भी। रुको, मेरे पास एक और आलेख है। शायद इससे हमारी समस्या और

हमारे सवालों का कुछ जवाब मिल पाए।

कंचन : ठीक। इसे भी देखते हैं। इसमें क्या कहा गया है?

वर्षा : तो इस लेख में एलन सी. ओर्नस्टीन ने किसी पेशे के 10 तत्त्वों को सूचीबद्ध किया है। इसमें से कुछ तो वही कहते हैं जो सिड्नी ने अपने लेख में कहा, लेकिन कुछ उससे अलग हैं। जैसे कि यह 'एक नियोजित ज्ञान जो कि पेशेवर विद्यालयों या विश्वविद्यालयों से अर्जित किया गया हो।' (A defined body of knowledge learned in universities or professional schools). तो उनका मत यहाँ स्पष्ट है कि विषय या पेशे का ज्ञान किसी औपचारिक संस्था से ही ग्रहण किया गया हो। इसका दूसरा पहलू देखा जाए तो यह अनुभव या अनौपचारिक स्रोतों से मिले ज्ञान को नज़रअन्दाज़ करता हुआ लग रहा है।

कंचन : सही, लेकिन अगर दूसरे और तीसरे बिन्दु 'शोध और सिद्धान्त को प्रोत्साहन और कार्य के साथ संयोजन' (Research and theory [are] encouraged and combined with practice) और 'लाइसेन्स के मानकों एवं प्रवेश सम्बन्धी आवश्यकताओं पर नियंत्रण' (Control over licensing standards and entry requirements), को देखा जाए तो अभी हम इस स्थिति से बहुत दूर हैं।

वर्षा : अन्य कुछ बिन्दु हैं, 'अपने ख़ुद के काम के निर्धारण में स्वायत्तता' (Autonomy in determining one's own work), 'कार्य के प्रति समर्पण का भाव' (High commitment to work) और 'अच्छी सामाजिक एवं आर्थिक स्थिति' (High status and economic standing).

कंचन : स्वायत्तता के मुद्दे पर तो हम चर्चा कर ही चुके हैं। जहाँ तक रही सामाजिक और आर्थिक स्थिति की बात, तो मैं उससे भी इत्तेफ़ाक़ रखती हूँ। मुझे भी यह महसूस होता है कि समुदाय में हम लोगों की एक अलग पहचान होती है। सामाजिक चर्चाओं के बीच लोगों की रुचि होती है यह जानने में कि एक शिक्षक विषय पर क्या राय रखता है और हमारी बात ध्यान से सुनी भी जाती है। हालाँकि, कुछ प्रभाव इस बात का भी पड़ता है कि आप कैसे स्कूल में और किस पद पर पढ़ा रहे हैं। और छठे और सातवें वेतन आयोग के बाद हमारी आर्थिक स्थिति भी पहले से बहुत बदली है।

वर्षा : सुनो, एक और बात जो एलन कहते हैं, 'प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा पेशेवरों की सुगमता दिशा में कार्य; (प्रशासन) के कार्य को कम वरीयता और और उनका पद अवांछनीय' (Administrators facilitating the work of professionals; their functions being secondary and their post undesirable) मुझे लगता है यह बात आयुर्विज्ञान (मेडिकल) के क्षेत्र पर ज़्यादा लागू होती है, जहाँ चिकित्सकों को ज़्यादा महत्त्व दिया जाता है और प्रशासनिक अधिकारी परदे के पीछे से काम करते हैं।

कंचन : तुम सही कह रही हो, और हमारी स्थिति में चीज़ें बिल्कुल उलट स्थिति में हैं। यहाँ प्रशासन इस तंत्र का सबसे शक्तिशाली धड़ा है जबकि हम शिक्षक इसमें सबसे निचले पायदान पर नज़र आते हैं। कुछ समय पहले तो यह चर्चा भी ज़ोरों पर थी कि शिक्षकों के बदले ऑडियो-वीडियो (AV) माध्यम से ही बच्चों को पढ़ाया जाए। मुझे तो यह नहीं समझ आता कि किस बात से लोग ऐसा मान लेते हैं कि शिक्षण एक आसान काम है और कोई भी या कैसे भी इसे कर सकता है।

वर्षा : अरे, तुम तो भावुक हो रही हो यार! मैं तुम्हारी बातों से सहमत हूँ। शिक्षक जो कि बच्चों के बीच मौजूद रहकर काम करते हैं उन्हें शिक्षातंत्र में वह जगह नहीं मिलती जिसके वे हक़दार हैं। मैं तो यह मानती हूँ कि समय की आवश्यकता यह है कि सारा तंत्र शिक्षकों के सशक्तिकरण के लिए काम करे।

कंचन : जब भी विद्यार्थियों के ख़राब शैक्षणिक प्रदर्शन की कोई रिपोर्ट सामने आती है, सारा दोष एक तरीक़े से शिक्षकों पर ही

डाल दिया जाता है। मुझे तो लगता है कि हमें एक आपातोपयोगी मानव समूह मान लिया गया है जिसे किसी भी काम के लिए लगाया जा सकता है, चाहे वह चुनाव करवाना हो या इंसानों या पशुओं की गणना करना। हमारे लिए 'आवश्यकता आधारित' ट्रेनिंग करवाई जाती हैं जिनमें हमारी काल्पनिक आवश्यकताओं का समाधान हमें बताया जाता है। कई बार तो यह ट्रेनिंग इसी आधार पर हो जाती हैं कि किस विषय के मास्टर-ट्रेनर उपलब्ध हैं उस समय। हमें बाहरी लोगों की ज़रूरत नहीं है यह बताने के लिए कि क्यों हमारे बच्चे पिछड़ रहे हैं या सीख नहीं पा रहे हैं। हमें पता है। समस्या यह है कि हमसे अपेक्षित है कि हम पिछड़ रहे या कमज़ोर बच्चों के साथ ज़्यादा समय बिताएँ ताकि उन्हें बाक़ी कक्षा के साथ लाया जा सके। उसी के साथ हमें बाक़ी की कक्षा को भी आगे का पढ़ाना है और पाठ्यक्रम पूरा करवाना है। और उसके साथ तमाम तरह के पत्रक भरकर भिजवाने हैं, पोर्टफ़ोलियो तैयार करने हैं, बच्चों को मध्याह्न भोजन (एमडीएम) व दूध भी देना है और इन सब गतिविधियों के बीच हमारे पास पढ़ाने के लिए कितना समय बचता है? कई बार हम एक समूह को पढ़ाते हैं और दूसरा समूह छूट जाता है।

वर्षा : तो तुम उनको ख़ुद से करने के लिए कोई गतिविधि नहीं देतीं?

कंचन : मुझे तो इसमें भी समस्या नज़र आती है। कई बार हम उन्हें कोई गतिविधि दे देते हैं ताकि वे व्यस्त रहें जबकि होना यह चाहिए कि हम उनके साथ उनके ज्ञान में वृद्धि करने की दिशा में काम करें। इस तरह गतिविधियाँ देकर हम ज़्यादा-से-ज़्यादा यह सुनिश्चित कर पाते हैं कि बच्चा अपने वर्तमान स्तर से नीचे ना जाए। अब हम पारलौकिक तो हैं नहीं, इंसान ही हैं। एक साथ कई कक्षाओं को सँभालना-पढ़ाना-सिखाना एक थका देने वाली प्रक्रिया है और हमें एक कालांश के साथ समय ही कितना मिलता है, 30-40 मिनट। कई बार तो मुझे लगता है कि आज मैंने किसी को कुछ पढ़ाया-सिखाया ही नहीं।

वर्षा: थोड़ी-सी समस्या तो तुम्हारे इस रवैए में भी है।

कंचन : मतलब?

वर्षा : मैं यह नहीं समझ पाती कि क्यों शिक्षक विद्यार्थियों को सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार नहीं मानते। क्या तुम्हें अपनी सोच भी उन प्रशासनिक अधिकारियों जैसी ही नहीं लगती जिनसे तुम्हें शिकायत है? उनकी तरह तुम्हें भी यही लगता है कि सीखना-सिखाना तभी हो पाएगा, जब तुम करवाओगी। बच्चों का ज्ञान प्राप्ति का मार्ग तुम्हीं से होकर गुज़रता है और वे केवल एक ख़ाली स्लेट के समान हैं जिस पर ज्ञान की इबारत तुम्हारे ही हाथों से लिखी जा सकती है। मेरी सोच में तो यह भी कोई पेशेवर रवैया नहीं है। एक शिक्षक के पेशेवर होने की अवधारणा अन्य पेशों या पेशेवरों से अलग होती है। मेरे मत में तो शिक्षक के पेशे में यह सबसे महत्त्वपूर्ण है कि वह अपने साथियों और विद्यार्थियों के लिए सीखने-सिखाने के अवसर उपलब्ध कराए और इसके लिए उन्हें प्रोत्साहित करे और यह बात पेशेवर होने की जितनी अवधारणाएँ हमने पढ़ीं, उनमें नहीं कही गई है।

कंचन : अब तो तुम आदर्शवादी और पक्षपाती हो रही हो। हम भी आख़िर एक सामाजिक प्राणी हैं। जिस माहौल में हम काम करते हैं, उसमें अकसर हर किसी के पास हमें कहने के लिए कुछ है लेकिन हमारी बात सुनकर कोई राज़ी नहीं है, जिस वजह से अति-आवश्यक से ज़्यादा कुछ करने का मन ही नहीं करता। ये तंत्र हमसे अपेक्षा करता है कि हम एक पूर्व नियोजित और पूर्णतया निर्देशित तरीक़े से काम करें। रचनात्मकता और सजगता की वजह से कई बार आप अपने ही साथियों और अधिकारियों के निशाने पर आ जाते हो। हममें से अधिकतर शिक्षक यहाँ यही सपना लेकर

आए थे कि वे विद्यालय के सबसे चहेते शिक्षक बनेंगे और अपने हर एक विद्यार्थी के जीवन को बेहतर बना पाएँगे, पर अन्त में सारी लड़ाई यहाँ तंत्र में बने रहने तक ही सीमित रह जाती है। विद्यार्थियों की बेहतरी के लिए नित नए प्रयास हो रहे हैं लेकिन कई बार नई-नई नीतियाँ हमारे हाथ पहले से भी ज़्यादा ज़ोर से जकड़ देती हैं।[1]

वर्षा : काश, मैं तुम्हारी स्थिति को पूरी तरह समझ पाती! लेकिन सच कहूँ तो इस विषय पर मेरी समझ अभी सीमित ही है। नीतियों के सम्बन्ध में कही तुम्हारी बात का मैं भी समर्थन करती हूँ। शायद हमारे नीति निर्माता भी, अपने तमाम तजुर्बों, ज्ञान, सोच और विशेषज्ञता के बावजूद इस विचार को नज़रअन्दाज़ कर देते हैं कि हर शिक्षक, कक्षा और उसमें पढ़ने वाला हर विद्यार्थी अपने आप में अनूठा है। जो आज काम कर रहा है, शायद कल वह ना करे, या जो पद्धति एक विद्यार्थी के लिए उपयोगी है, वह दूसरे के लिए ना हो। नीतियाँ और कार्यक्रम इस सोच के साथ बनाए हुए लगते हैं कि हर शिक्षक इन कार्यक्रमों को समान रूप से लागू कर पाने में सक्षम है और छात्र की रुचि का स्तर भी समान है।

क्या तुम्हें मालूम है कि राष्ट्रीय पाठ्यचर्चा की रूपरेखा 2005 शिक्षकों को 'ज्ञान के सृजनकर्ता और चिन्तनशील पेशेवर' के रूप में परिभाषित करती है। मैं भी चिन्तनशील पेशेवर के बिन्दु से सहमत हूँ, पर ज्ञान के सृजनकर्ता वाली बात से थोड़ा मतभेद है। मुझे लगता है कि बच्चों की शिक्षा केवल एक शिक्षक पर ही निर्भर नहीं है और वे अपने परिवेश से भी हर समय सीख रहे होते हैं। शिक्षक की भूमिका उस सुगमकर्ता की है जो उन्हें अपने परिवेश के ज्ञान और शैक्षणिक ज्ञान को जोड़ने की कला सिखाते हैं। ज्ञान के सृजनकर्ता की अवधारणा तो शिक्षकों के सीखने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करती है। हमें यह मानना पड़ेगा कि अगर सीखना एक निरन्तर चलने वाली प्रक्रिया है तो यह बच्चों और शिक्षकों, दोनों पर लागू होती है।

कंचन : चलो, कम-से-कम राष्ट्रीय पाठ्य-चर्चा की रूपरेखा 2005 की नज़र में तो हम पेशेवर हैं। इस पेशे की प्रकृति एलन और सिड्नी की कही बातों के मुताबिक़ भी है। लेकिन उससे अलग भी है। तो फिर अन्त में हम क्या हुए?

वर्षा : हा...हा...हा... लगता है यह पेशा वैसा ही है जिसे अमिताई एट्जीयोनि 'आंशिक-पेशेवर' कहते हैं (ओर्नस्टीन, 1977)।

(दोनों हँसती हैं)

कंचन : यह एक बहुत ही मज़ेदार और ज्ञानवर्धक चर्चा रही। काफ़ी अरसे बाद मैंने अपने काम और बच्चों को लेकर किसी से बात की है। मुझे बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में सक्रिय भागीदार होने की बात से सहमत ना होने की कोई वजह नज़र नहीं आती। हम हमेशा इस प्रक्रिया में एक-दूसरे के सहयोगी होने की बात तो करते हैं, पर उस पर ज़्यादा अमल नहीं करते। पर शायद अब इस स्थिति को बदलने का वक़्त आ गया है।

वर्षा: इस बातचीत ने मुझे जवाबों से ज़्यादा सवाल दिए हैं। मैं उम्मीद करती हूँ कि प्रशासन और स्वयंसेवी संस्थाओं द्वारा भी इस दिशा में क़दम उठाए जाएँ और शिक्षकों की समस्याओं पर समानुभूति के साथ विचार और चर्चा हो। शिक्षा जगत में कोई भी बड़ा बदलाव शिक्षकों को साथ लेकर चले बिना सम्भव नहीं है। तो शिक्षकों को निशाने पर रखने की जगह अगर उन्हें सशक्त बनाए जाने पर ज़ोर दिया जाए, तो शायद बात थोड़ी जल्दी बन जाए। साथ ही उम्मीद है कि शिक्षक भी विद्यार्थियों के प्रति अपने रवैए में बदलाव लाने की दिशा में सोचेंगे।

कंचन : और मैं प्रार्थना करूँगी कि तुम्हारी सारी उम्मीदें पूरी हो जाएँ।

1. उपर्युक्त चर्चा राजस्थान में कुछ समय पहले हुई एक कार्यशाला में शिक्षकों के साथ हुई बातचीत पर आधारित है।

शिक्षकों के काम को किसी एक परिभाषा से बता पाना बड़ा मुश्किल है। अगर सभी प्रशिक्षणों को जोड़ा जाए तो शायद हमारे सैन्य बल के बाद शिक्षक जगत ही सबसे ज़्यादा प्रशिक्षित समूह है। लेकिन इस सबके बावजूद शिक्षा तंत्र में यह शिक्षक ख़ुद को हाशिए पर खड़ा पाता है।

कंचन और वर्षा के बीच हुई इस चर्चा में हमने देखा कि एक शिक्षक अपने दैनिक जीवन में किन–किन समस्याओं से जूझता है। शिक्षकों को केवल आलेखों में पेशेवर मान लेना और उन्हें एक पेशेवर–सी स्वायत्तता और सम्मान ना देना उनके साथ अन्याय करना है। जितनी ज़रूरत शिक्षकों को एक समर्पित प्रशासन तंत्र की है, उससे कहीं ज़्यादा ज़रूरत तंत्र को समर्पित और सक्षम शिक्षकों की है।

सन्दर्भ

Dorros, Sidney. *'Teachers as Labor; Teachers as Professionals.'* The High School Journal, 1971: 413-421.

Dhankar, Rohit. *Demotivating Teachers. 'Thinking Aloud'.* August 18, 2015. https://rohitdhankar.com/2015/08/18/demotivating-teachers/

Ornstein, Allan C. *'Teachers as professioanals.'* Social Science, 1977: 139-144.

Framework, National Curriculum. National Focus Group on Teacher Education for Curriculum Renewal. Delhi: NCERT, 2005.

वेनु तनेजा शिक्षाशास्त्र में परास्नातक हैं और वर्तमान में ग्वालियर में एक विद्यालय के साथ जुड़ी हैं।
सम्पर्क : venu.taneja14@apu.edu.in
अंकित मौर्य शिक्षाशास्त्र में परास्नातक हैं और वर्तमान में विद्या भवन सोसायटी, उदयपुर में शोधरत हैं।
सम्पर्क : ankit12maurya@gmail.com